# स्वर प्रवाह

**वसंत** प्रकृति-छंद का ऐसा मुकुलित मकरंद है, जो अपनी स्मित सुवासित मुस्कान भर से न केवल प्रकृति की असंख्य रूप छवियों का ऐन्द्रजालिक वितान रचित करता है बल्कि प्रकृति के पात-पात को ऊर्जस्वित कर सृजन के नए आयाम भी उद्घाटित करता है। वसंत के आते-आते शीत के दुकूल में दुबकी और सर्दवसन से अवगुंठित सद्य: यौवना कुसुम कलियां अपने प्रस्फुटन को उद्यत हो उठती हैं और वासंती बयार की मृदुल दुलार की थपकियां पाकर तनवंगी-तानों सी चक्षुदीर्घाओं में सजने लगती हैं।

वसंतदूत का संदेश पाकर जब पुष्पधन्वा अपने कामायुधों के साथ वासंती रथ पर सवार होकर प्रकृति पटल पर अपना शर संधान करता है, तो नव वधुओं सी लाज-लजीली ये कलियां अपने समस्त लावण्यमय मार्दव के साथ वसंतकंत को देखने झूमने लगती हैं। भ्रमरों की बारात कलिमुख-मार्दव के वशीभूत हो उनके आभा मंडल पर मंडराने लगती है। विटप वल्लरियां लिपट-झपट कर नव विकसित पादप प्रसूनों से केलि क्रीड़ा करने लगती हैं और मधुर कंठा वनप्रिय डाल-डाल को राग वसंत सुनाकर उद्दीप्त शृंगार के सुर भरने लगती है। वसंत का मसृण स्पर्श पाकर स्नेहमुग्धा नवौढ़ा सी वसुधा का भी गात-गात पुलक उठता है और वह बहुविध शृंगार के अपरिमित वैभव से भुवन को सम्मोहित करने लगती है। वस्तुत: वसंत ऋतुओं का राजा, महीनों में मधुमास और सृजनात्मक ऊर्जा का पर्याय है। शीत प्रकंपित निश्चेतन-सी प्रकृति जब वासंती ऊर्जासव का पान कर सौंदर्य-छंदों का रचाव करने लगती है तो लोक में प्रेम-प्रीत के तराने गूंजने लगते हैं।

वसंत में वन-पलाश फूला नहीं समाता और कंचन काया-सा अमलतास, अनुराग की अरुणिम आभा-सा सेमल और पुष्पाच्छादित कचनार की रूपश्री से सम्मोहित वृक्ष-वृक्ष अपनी रूप-राशि बिखेरने लगते हैं, वहीं ताम्रवर्णी कोपलों से सज्जित नीम भी तारकृति पुष्पों की भीनी सुवास से आत्म-मुग्ध हो झूमने लगता है। अंगराग से वेष्टित कोमलांगी तितलियां फूल-प्रभा पर प्रलुब्ध हो अल्हड़ यौवना सी इठलाती नर्तन करने लगती हैं। इस इन्द्रधनुषी अनुरागमयी परिदृश्य से अनुरंजित हो कवि एवं चित्रकार उसके रूप-स्वरूप को रूपायित करते हैं वहीं संगीतकारों के गायन-वादन से राग वसंत बहार के स्वर गूंजने लगते हैं।

किसी ने कहा है कि जो जितना जान पाता है उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाह पाता है उतना कर नहीं पाता और जो जितना कर पाता है उतना भोग नहीं पाता। किन्तु आप सब कुछ करने में समर्थ हों और आपके जीवन का प्रत्येक वासंती-प्रत्यूष माधुर्य से महकता, पक्षियों सा चहकता, जीवन-रस से झरता और फूलों सा मुस्काता हो। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'स्वर सरिता' का यह अंक आपके हाथों में

देवेंद्र शर्मा

चित्र सौजन्य
राजकुमार जांगिड़